अंधकार और तितली

लेखन व चित्रः एन ग्रिफैल्कोनी

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



अंधकार और तितली



लेखन व चित्रः एन ग्रिफैल्कोनी

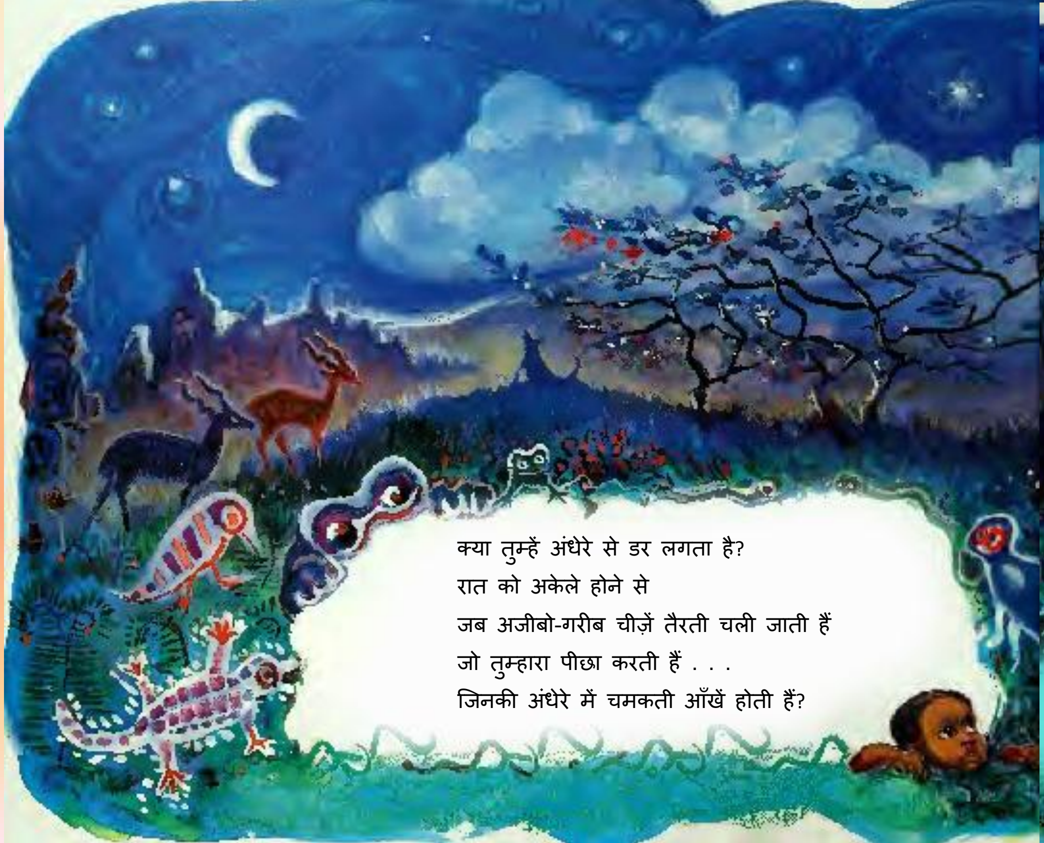
भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



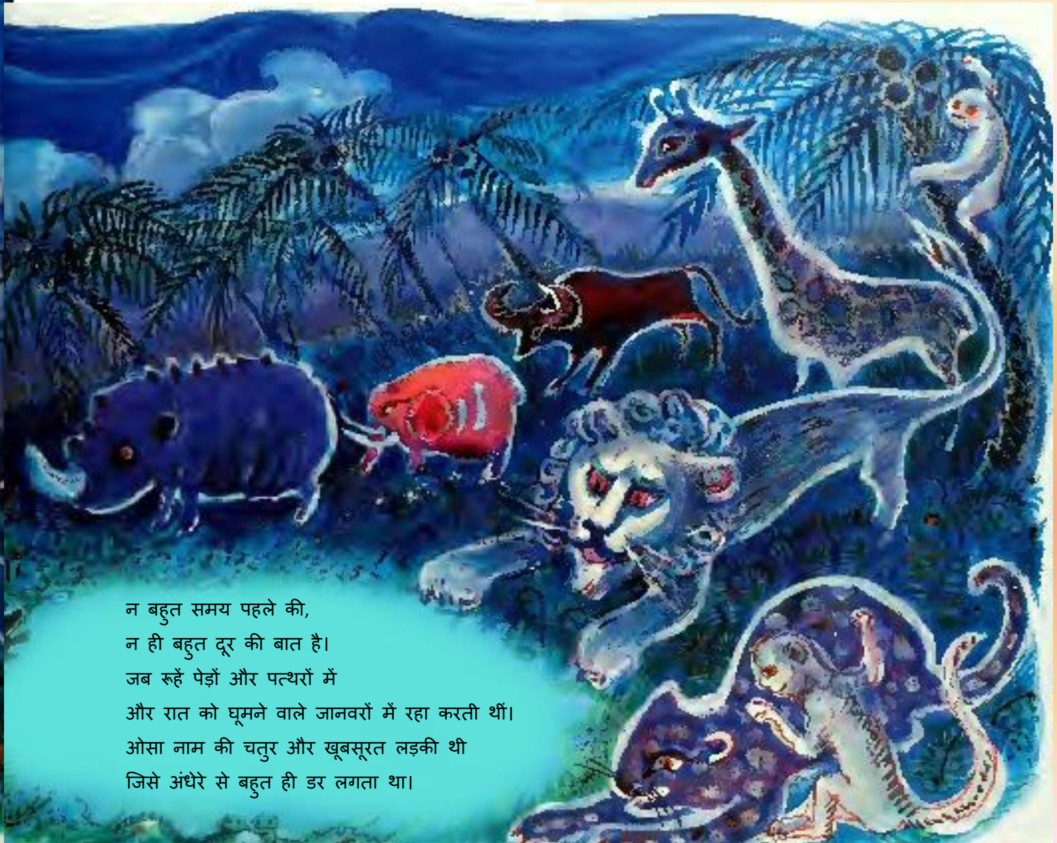
एक पुरानी अफ्रीकी कहावत है,
"अंधकार तितली का पीछा करता है।"

यह कहानी उन सबके लिए है
जिन्हें अंधेरे से डर लगता है।

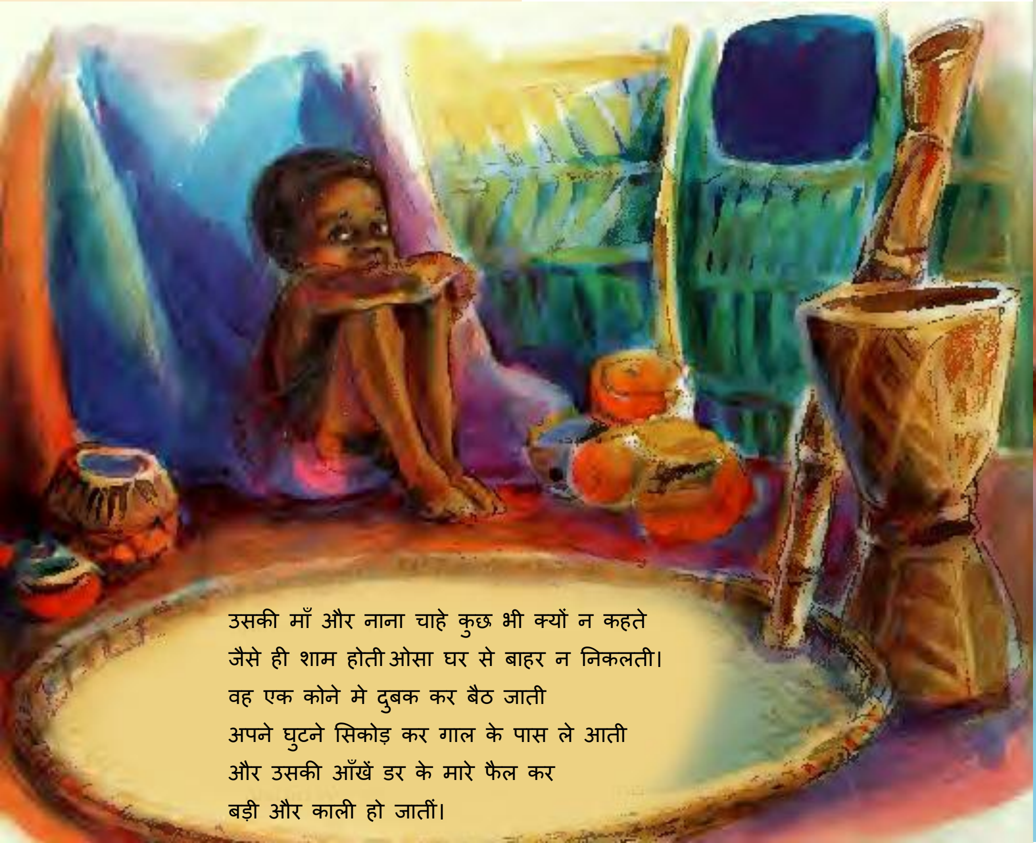




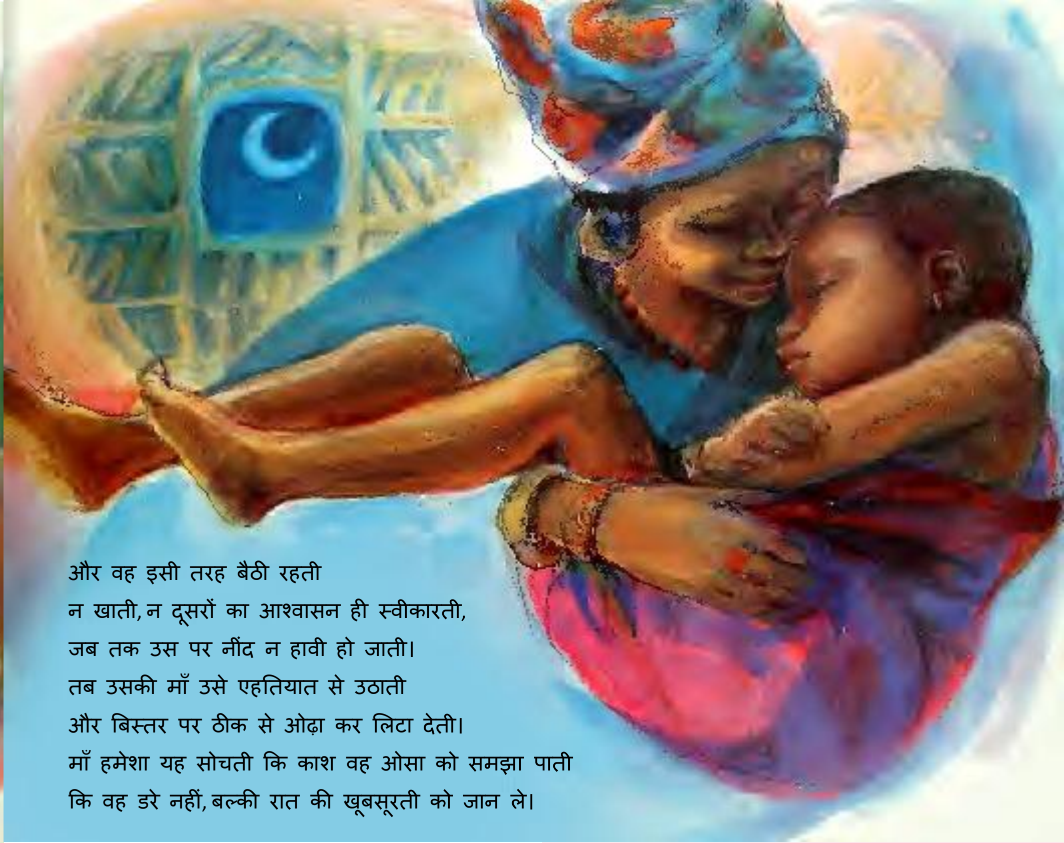
क्या तुम्हें अंधेरे से डर लगता है?
रात को अकेले होने से
जब अजीबो-गरीब चीज़ें तैरती चली जाती हैं
जो तुम्हारा पीछा करती हैं . . .
जिनकी अंधेरे में चमकती आँखें होती हैं?



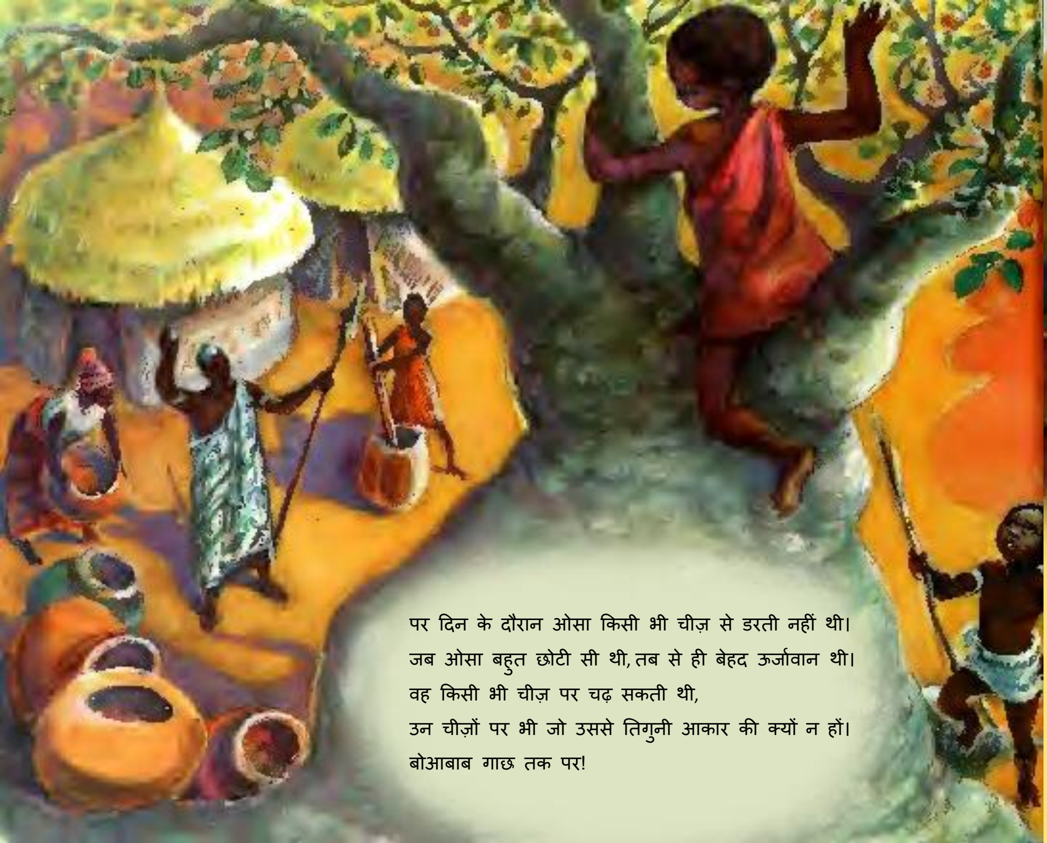
न बहुत समय पहले की,
न ही बहुत दूर की बात है।
जब रूहें पेड़ों और पत्थरों में
और रात को घूमने वाले जानवरों में रहा करती थीं।
ओसा नाम की चतुर और खूबसूरत लड़की थी
जिसे अंधेरे से बहुत ही डर लगता था।



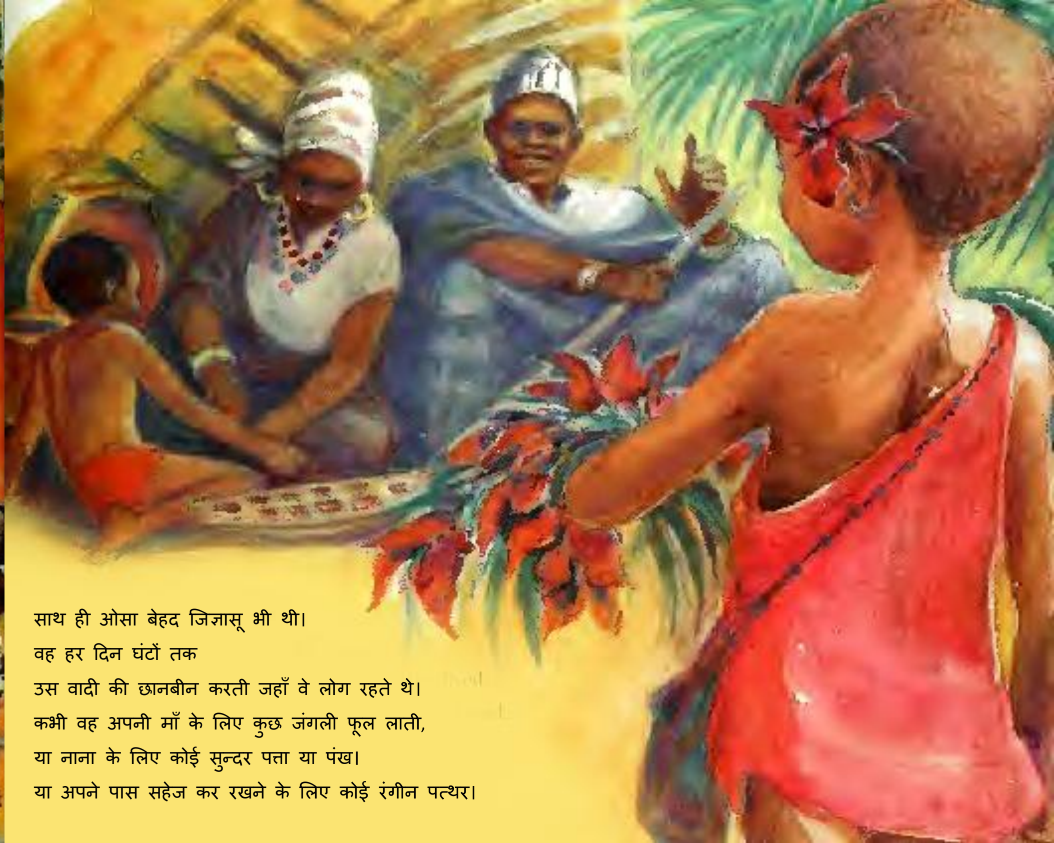
उसकी माँ और नाना चाहे कुछ भी क्यों न कहते
जैसे ही शाम होती ओसा घर से बाहर न निकलती।
वह एक कोने मे दुबक कर बैठ जाती
अपने घुटने सिकोड़ कर गाल के पास ले आती
और उसकी आँखें डर के मारे फैल कर
बड़ी और काली हो जातीं।



और वह इसी तरह बैठी रहती
न खाती, न दूसरों का आश्वासन ही स्वीकारती,
जब तक उस पर नींद न हावी हो जाती।
तब उसकी माँ उसे एहतियात से उठाती
और बिस्तर पर ठीक से ओढ़ा कर लिटा देती।
माँ हमेशा यह सोचती कि काश वह ओसा को समझा पाती
कि वह डरे नहीं, बल्कि रात की खूबसूरती को जान ले।



पर दिन के दौरान ओसा किसी भी चीज़ से डरती नहीं थी।
जब ओसा बहुत छोटी सी थी, तब से ही बेहद ऊर्जावान थी।
वह किसी भी चीज़ पर चढ़ सकती थी,
उन चीज़ों पर भी जो उससे तिगुनी आकार की क्यों न हों।
बोआबाब गाछ तक पर!



साथ ही ओसा बेहद जिज्ञासू भी थी।
वह हर दिन घंटों तक
उस वादी की छानबीन करती जहाँ वे लोग रहते थे।
कभी वह अपनी माँ के लिए कुछ जंगली फूल लाती,
या नाना के लिए कोई सुन्दर पता या पंख।
या अपने पास सहेज कर रखने के लिए कोई रंगीन पत्थर।



पर रात होते ही

दिन की निडर ओसा उतनी ही डरपोक बन जाती।

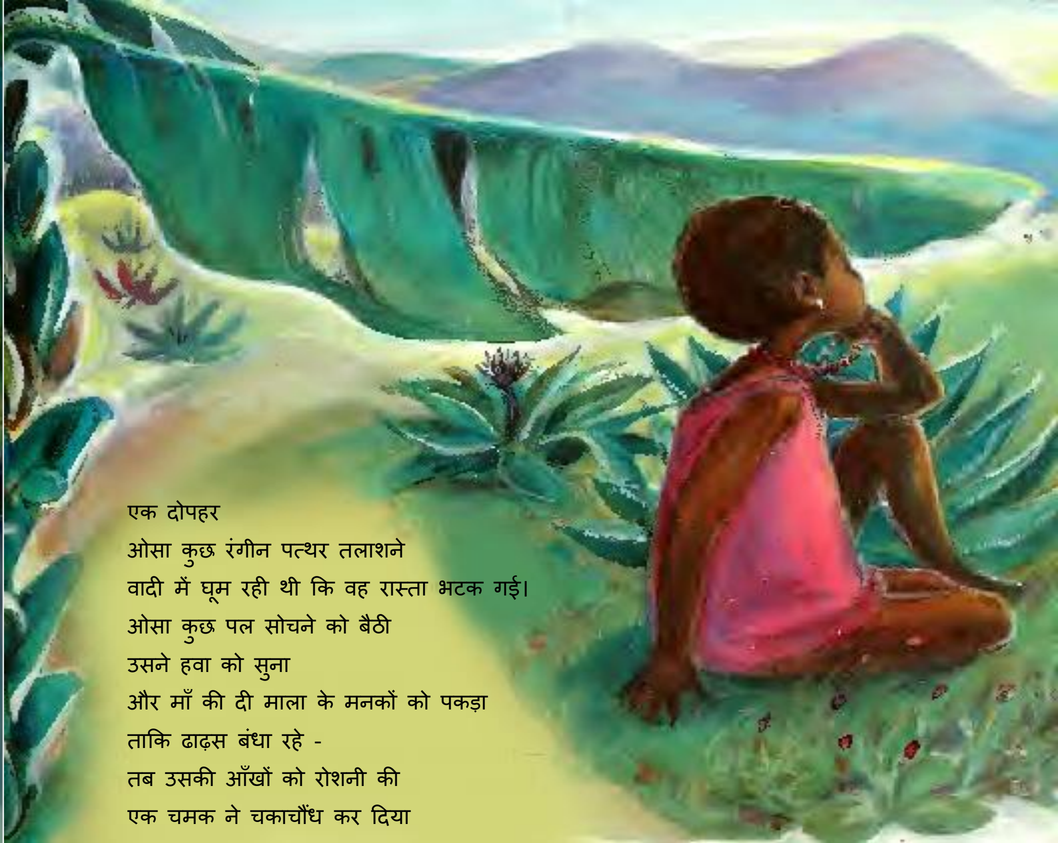
वह अपने शरीर की थरथराहट रोक ही नहीं पाती।

माँ की दी उस माला के बावजूद

जो चमकदार लाल चिन्ता मनकों से बनी थी,
ताकि उसे ढाढ़स मिले।

ओसा का यह हाल देख उसकी स्नेहिल माँ
आहें छोड़ती और सोचती,

क्या ओसा रात के डर से कभी उबर भी सकेगी?



एक दोपहर

ओसा कुछ रंगीन पत्थर तलाशने

वादी में घूम रही थी कि वह रास्ता भटक गई।

ओसा कुछ पल सोचने को बैठी

उसने हवा को सुना

और माँ की दी माला के मनकों को पकड़ा

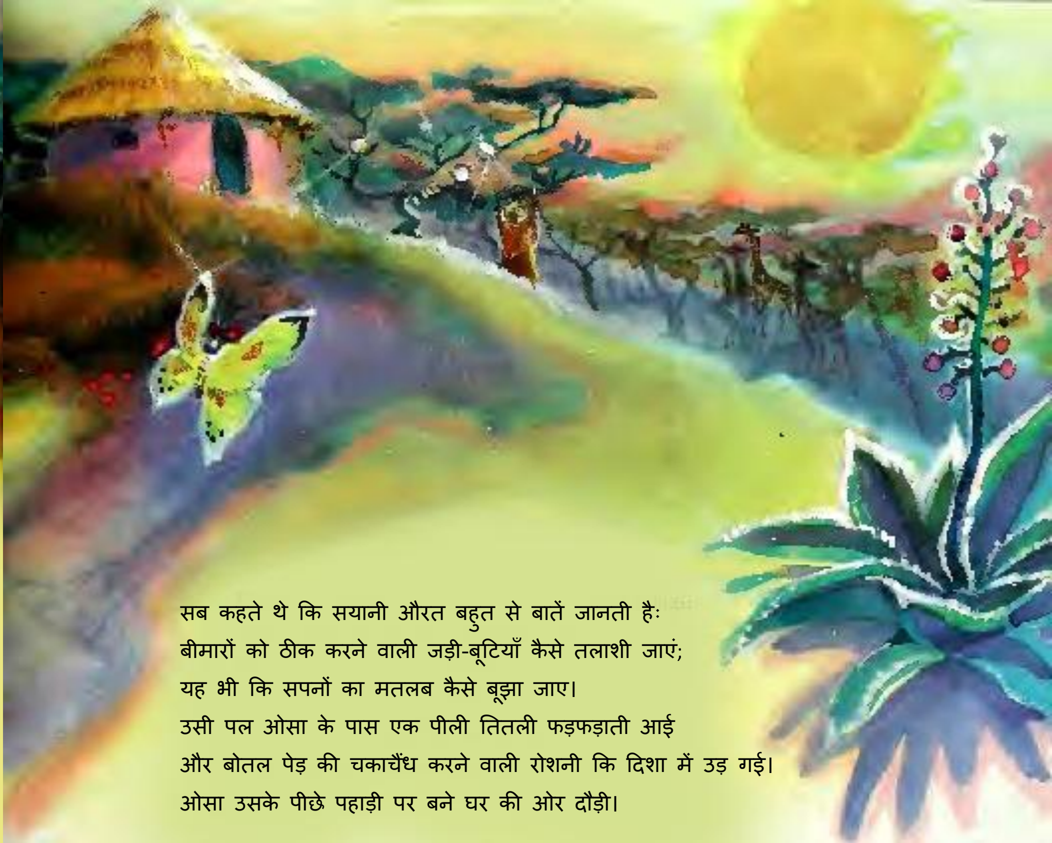
ताकि ढाढ़स बंधा रहे -

तब उसकी आँखों को रोशनी की

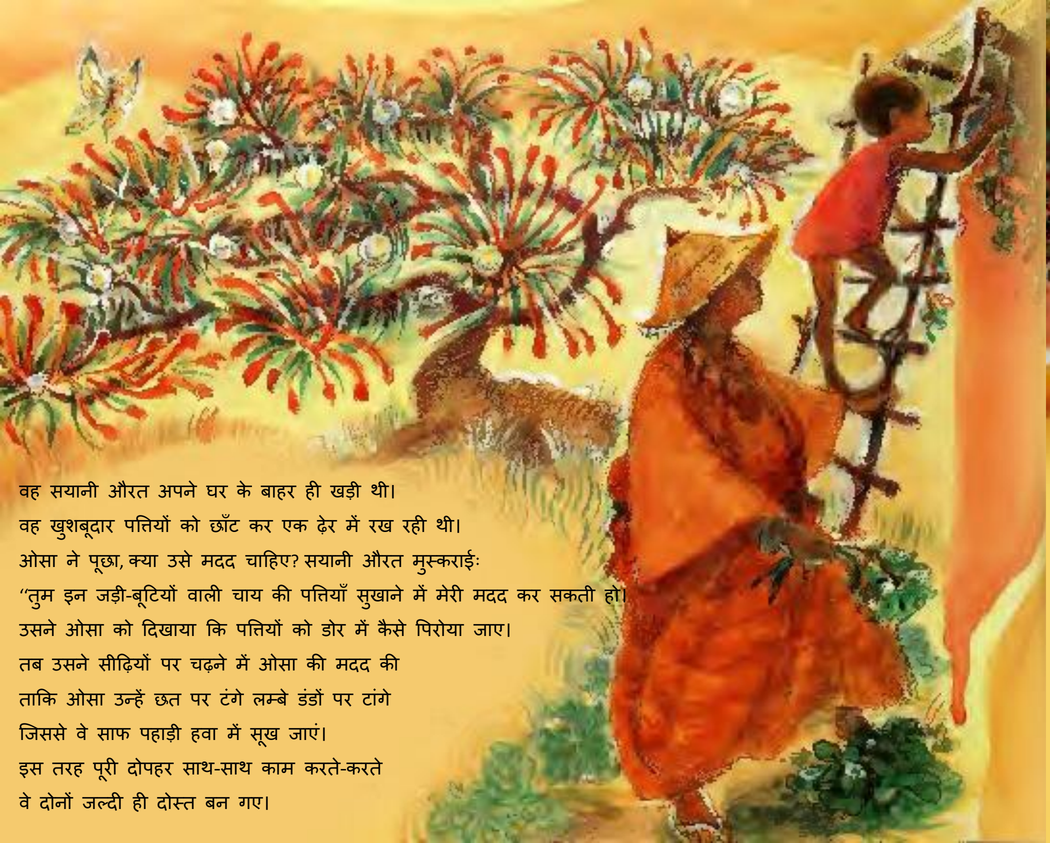
एक चमक ने चकाचौंध कर दिया



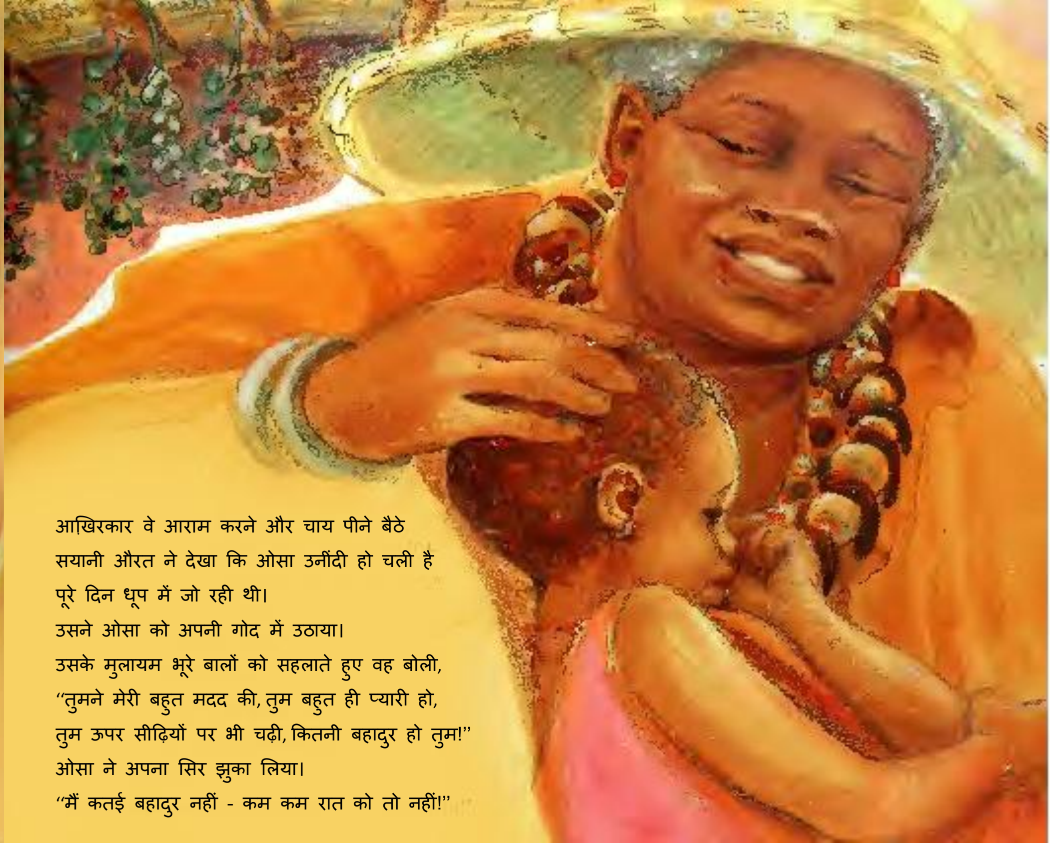
ओसा अपनी आँखों को ढक खड़ी हो गई।
उसने सूरज की रोशनी को कुछ बोतलों से प्रतिबिम्बित होते देखा।
वे बोतलें पेड़ों की लगभग हरेक डाल पर लगी थीं।
वे पेड़ सामने की पहाड़ी पर बने एक गुलाबी घर को घेरे थे।
तब ओसा को पता चल गया कि वह कहाँ है।
ये पेड़ सयानी औरत के ‘बोतल पेड़’ थे। ओसा की माँ ने उसे बताया था कि वह इस तरह अपने दोस्ताना पुरखों की रूहों को जो उन पेड़ों पर रहती थीं, वहीं बनाए रखती थी।
ताकि वे महफ़ूज़ रहें और उसके घर को महफ़ूज़ रखें।



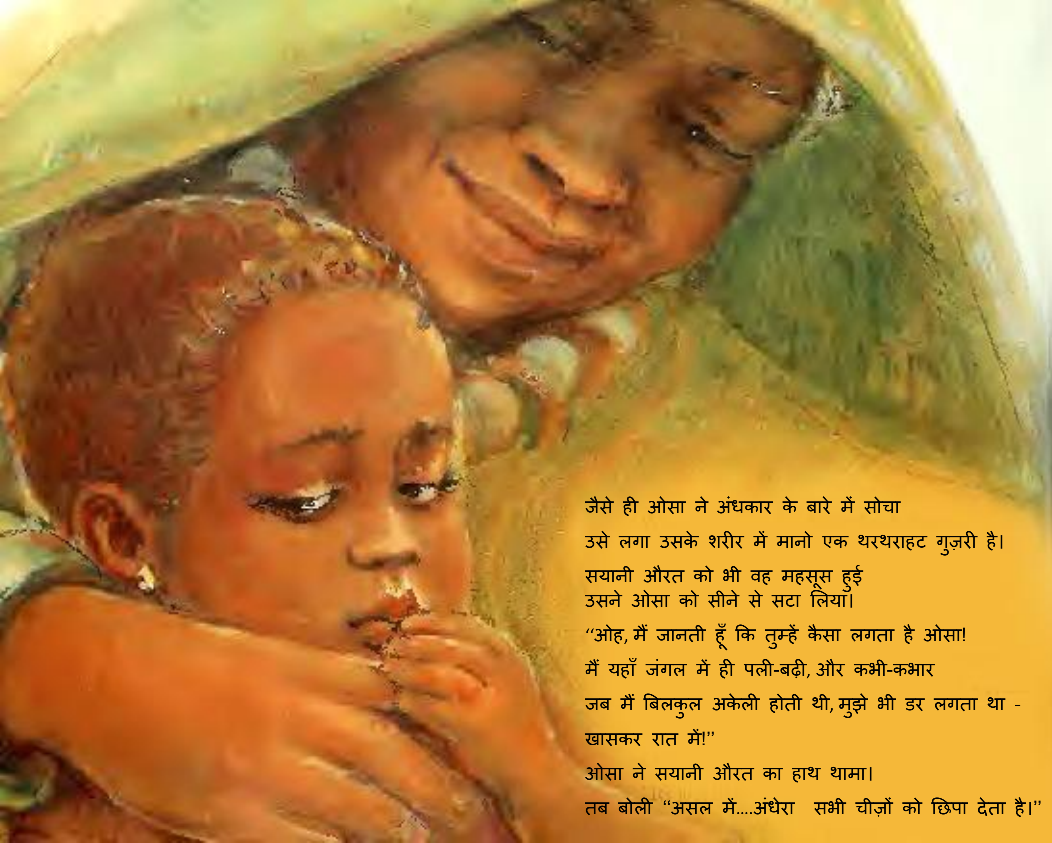
सब कहते थे कि सयानी औरत बहुत से बातें जानती है:
बीमारों को ठीक करने वाली जड़ी-बूटियाँ कैसे तलाशी जाएं;
यह भी कि सपनों का मतलब कैसे बूझा जाए।
उसी पल ओसा के पास एक पीली तितली फड़फड़ाती आई
और बोतल पेड़ की चकाचैंध करने वाली रोशनी कि दिशा में उड़ गई।
ओसा उसके पीछे पहाड़ी पर बने घर की ओर दौड़ी।



वह सयानी औरत अपने घर के बाहर ही खड़ी थी।
वह खुशबूदार पत्तियों को छाँट कर एक ढ़ेर में रख रही थी।
ओसा ने पूछा, क्या उसे मदद चाहिए? सयानी औरत मुस्कराईः
"तुम इन जड़ी-बूटियों वाली चाय की पत्तियाँ सुखाने में मेरी मदद कर सकती हो।
उसने ओसा को दिखाया कि पत्तियों को डोर में कैसे पिरोया जाए।
तब उसने सीढ़ियों पर चढ़ने में ओसा की मदद की
ताकि ओसा उन्हें छत पर टंगे लम्बे डंडों पर टांगे
जिससे वे साफ पहाड़ी हवा में सूख जाएं।
इस तरह पूरी दोपहर साथ-साथ काम करते-करते
वे दोनों जल्दी ही दोस्त बन गए।



आखिरकार वे आराम करने और चाय पीने बैठे
सयानी औरत ने देखा कि ओसा उनींदी हो चली है
पूरे दिन धूप में जो रही थी।
उसने ओसा को अपनी गोद में उठाया।
उसके मुलायम भूरे बालों को सहलाते हुए वह बोली,
"तुमने मेरी बहुत मदद की, तुम बहुत ही प्यारी हो,
तुम ऊपर सीढ़ियों पर भी चढ़ी, कितनी बहादुर हो तुम!"
ओसा ने अपना सिर झुका लिया।
"मैं कतई बहादुर नहीं - कम कम रात को तो नहीं!"



जैसे ही ओसा ने अंधकार के बारे में सोचा

उसे लगा उसके शरीर में मानो एक थरथराहट गुज़री है।

सयानी औरत को भी वह महसूस हुई
उसने ओसा को सीने से सटा लिया।

"ओह, मैं जानती हूँ कि तुम्हें कैसा लगता है ओसा!

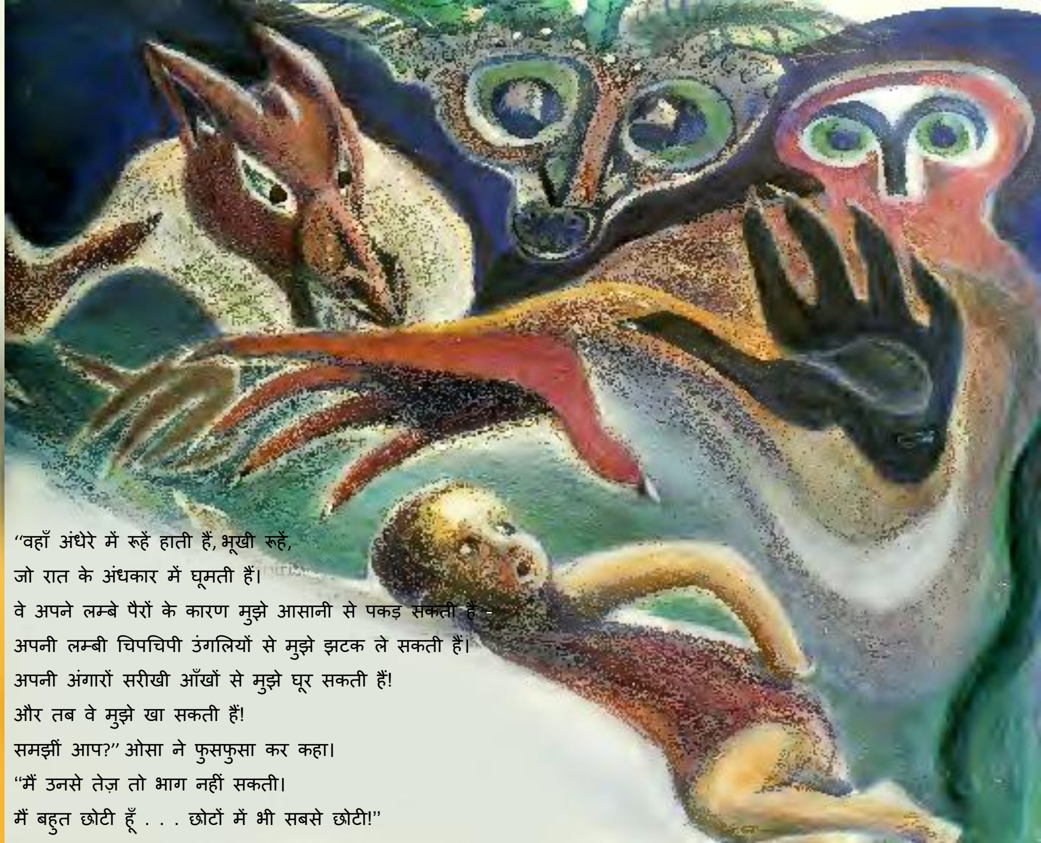
मैं यहाँ जंगल में ही पली-बढ़ी, और कभी-कभार

जब मैं बिलकुल अकेली होती थी, मुझे भी डर लगता था -

खासकर रात में!"

ओसा ने सयानी औरत का हाथ थामा।

तब बोली "असल में....अंधेरा सभी चीज़ों को छिपा देता है।"



"वहाँ अंधेरे में रूहें हाती हैं, भूखी रूहें,

जो रात के अंधकार में घूमती हैं।

वे अपने लम्बे पैरों के कारण मुझे आसानी से पकड़ सकती हैं -

अपनी लम्बी चिपचिपी उंगलियों से मुझे झटक ले सकती हैं।

अपनी अंगारों सरीखी आँखों से मुझे घूर सकती हैं!

और तब वे मुझे खा सकती हैं!

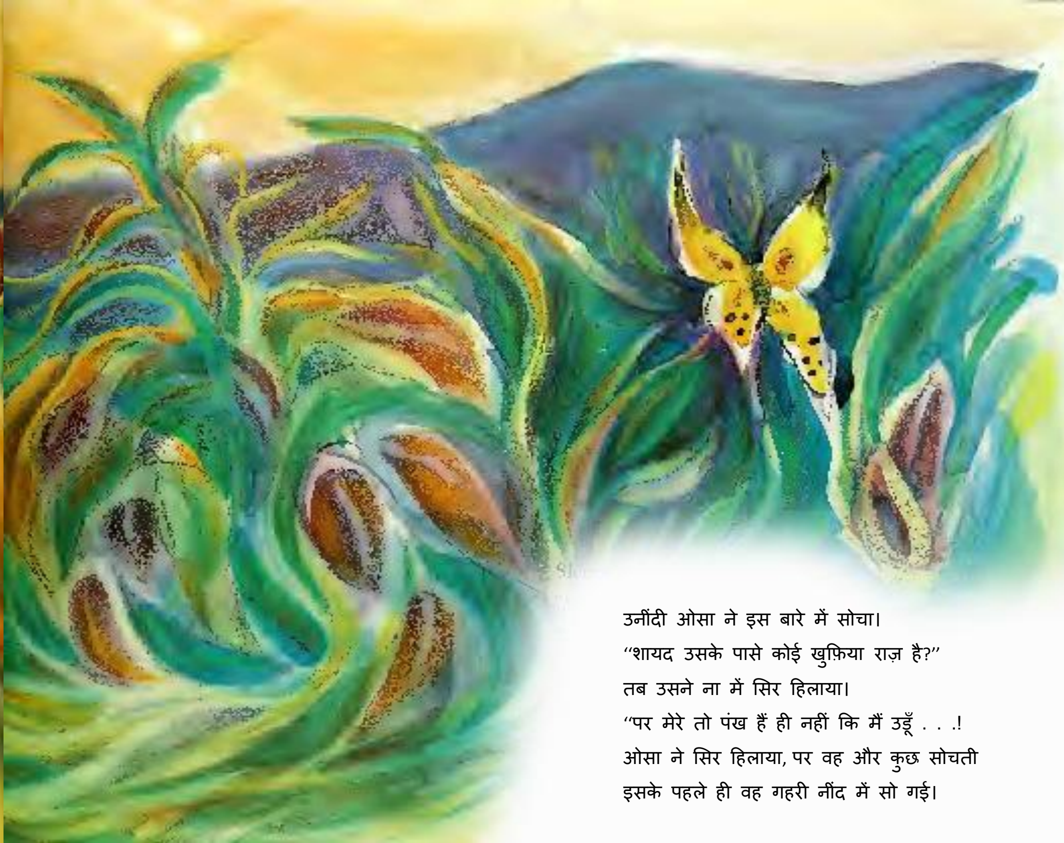
समझीं आप?" ओसा ने फुसफुसा कर कहा।

"मैं उनसे तेज़ तो भाग नहीं सकती।

मैं बहुत छोटी हूँ . . . छोटों में भी सबसे छोटी!"



सयानी औरत मुस्कुराई और उसने अपना सिर हिलाया।
उसने पास ही फड़फड़ाती तितली की ओर इशारा किया,
जो ढलती धूप में अपने रंगीन पंखों को गरमा रही थी।
“उस नन्ही तितली को देखो ओसा।
वह भी साचती होगी कि वह छोटों में सबसे छोटी है
और अंधेरा उसका पीछा करता है -
पर वह उड़ती रहती है।”



उनींदी ओसा ने इस बारे में सोचा।
“शायद उसके पासे कोई खुफ़िया राज़ है?”
तब उसने ना में सिर हिलाया।
“पर मेरे तो पंख हैं ही नहीं कि मैं उड़ूँ . . .!
ओसा ने सिर हिलाया, पर वह और कुछ सोचती
इसके पहले ही वह गहरी नींद में सो गई।



ओसा ने सपने में देखा कि पीली तितली उसके पास से उड़ी
ज़ोर से चमकते हुए, मानो उसके पास उसकी अपनी रोशनी हो।
ओसा के गाल को हल्के से छूते हुए
उसने मानों कहाः “मेरे पीछे आओ . . . मेरा पीछा करो!”

ओसा उठी और उस नन्ही तितली के पीछे दौड़ी
जिसके चमकीले पंख फड़फड़ा कर अंधेरे के बीच से रास्ता बना रहे थे।
ओसा को लगा कि किसीने उसका कंधा पकड़ लिया है।
वह जल्दी से मुड़ी।



यह तो बस एक छोटी टहनी थी -
पर अब उसके पास तितली की साहस भरी रोशनी नहीं थी,
वह निपट अकेली थी।
ओसा धरती पर लेटी और रोने लगी।

ओसा को अपने नीचे गरमाहट महसूस हुई . . .
तब ओसा को अपने अन्दर कुछ बदलता
महसूस हुआ . . . उसे लगा कि वह हल्की होने लगी है।



वह हवा में ऊपर उड़ने लगी, ठीक तितली की तरह।
वह चाँद के साथ उड़ी
रात के आकाश में अपने गाँव में बहुत ऊपर!

तब उसने आस-पास देखा
और पाया कि रात खास
अंधेरी थी ही नहीं!



रात तो टिमटिमाते
हज़ारों दोस्ताना तारों से
और चाँद की चटक रोशनी से भरी थी।



ओसा अब भी सयानी औरत की गोद में ही थी
जो अब उसकी ओर नीचे ताकते हुए मुस्करा रही थी।
ओसा ने ऊपर देखा, उसे अपना सपना याद आया।
उसके मन में अब भी खुशी का भाव भरा था।
ओसा ने सयानी औरत को अपने सपने के बारे में बताया।



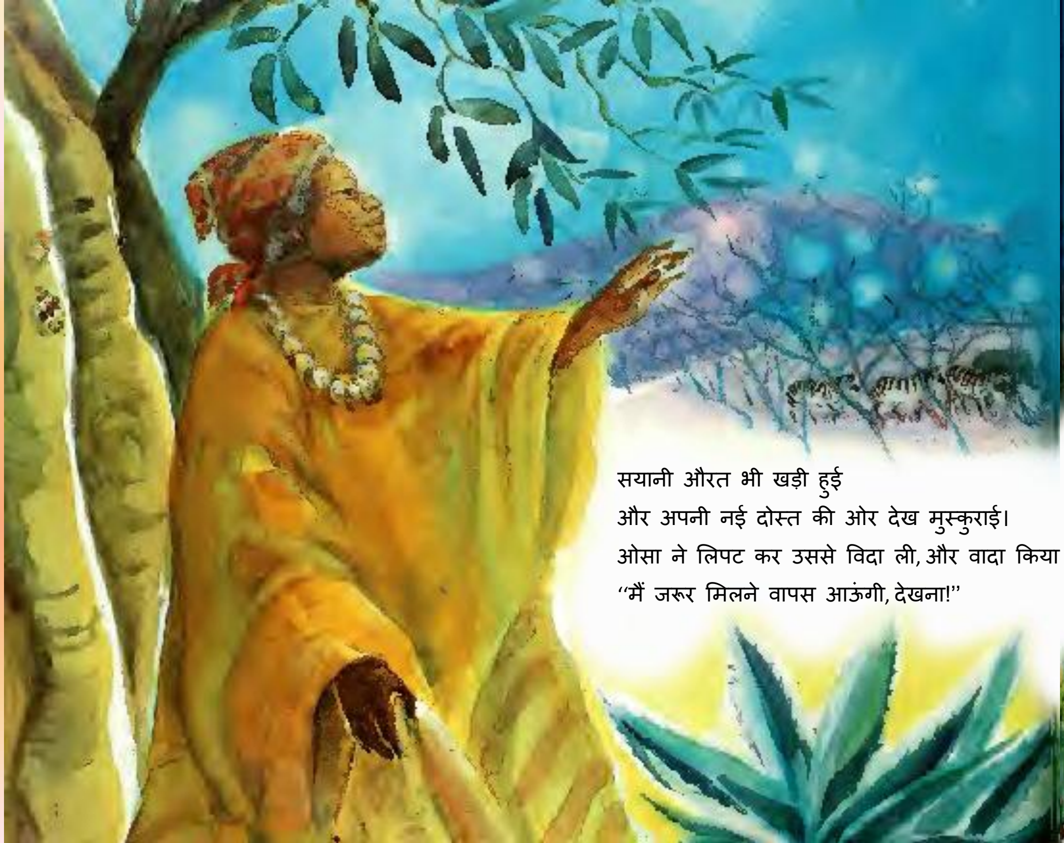
ओसा ने जैसे ही अपनी बात खत्म की
...कि अचानक चारों ओर रोशनी हो गई!
पीली तितली पास से उड़ी
और निडर रोशनी बिखेरती - उसकी हथेली पर आ बैठी!
ओसा ने साँस रोक उसे ध्यान से देखा।
"हो सकता है कि मैं भी तितली जैसी निडर बनूं?"
सयानी औरत ने हाँ में सिर हिलाया।



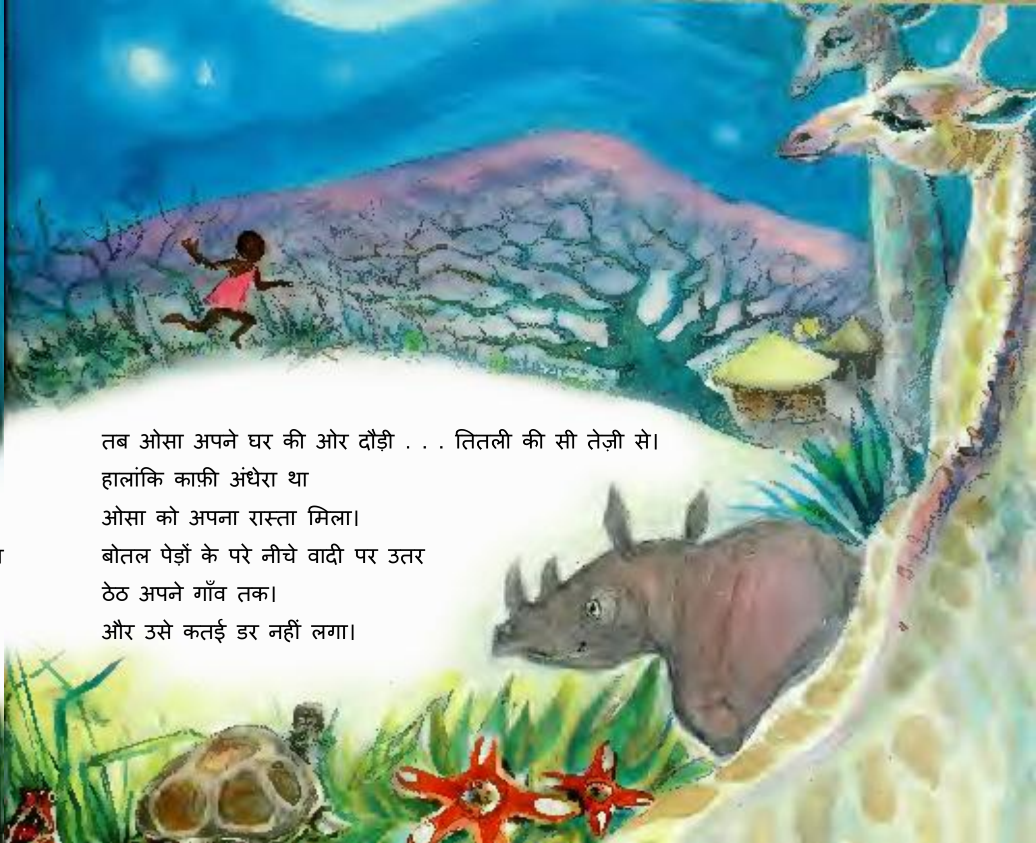
तब सयानी औरत ने ओसा का हाथ अपने हाथ में लिया
“अब उड़ने की तुम्हारी बारी है ओसा - रात होने ही वाली है!
अब अपने घर उड़ जाओ!” उसने कहा।
क्या तुम चाहागी कि मैं तुम्हारे साथ चलूं?”
ओसा ने ना में सिर हिलाया।
“नहीं मैं साचती हूँ कि इस बार मैं अकेली ही जा सकती हूँ।
मुझे अब अपना रास्ता पता है।”



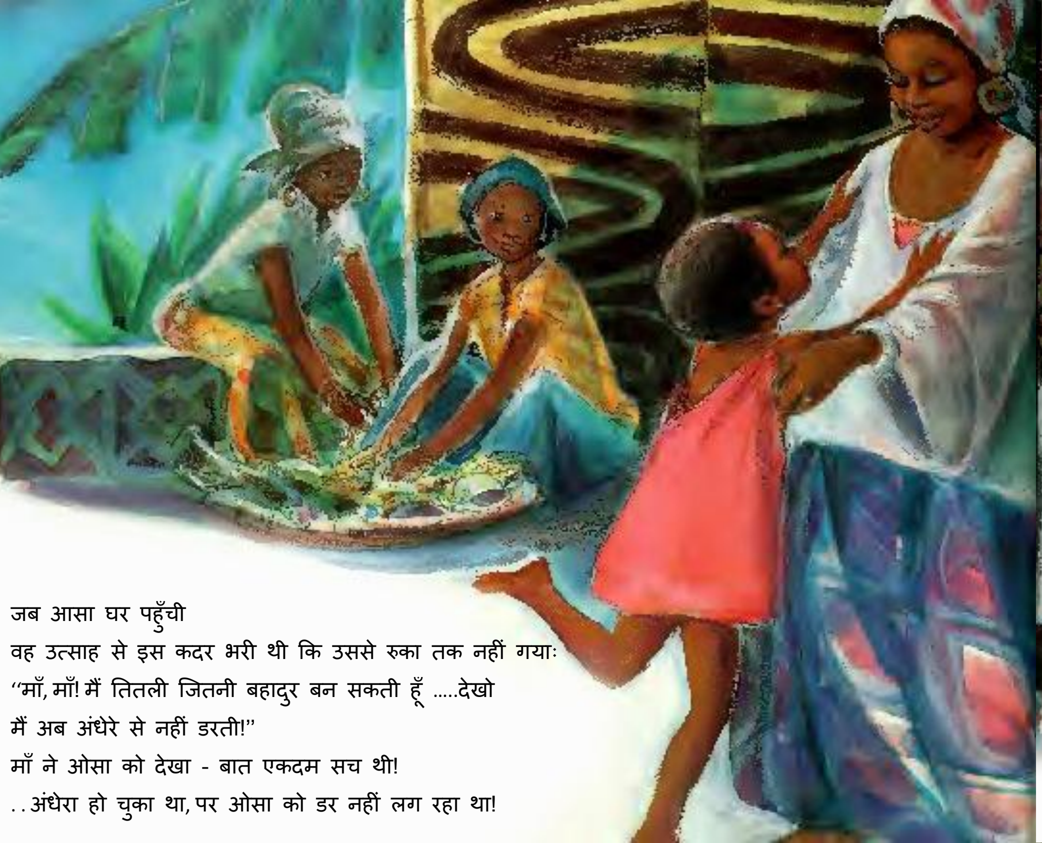
अचानक उसे अहसास हुआ कि उसने भला क्या कह दिया है।
ओसा खिलखिला कर हंसी और
सयानी औरत की गोद से नीचे कूद गई
“मुझे अब डर नहीं लग रहा!”



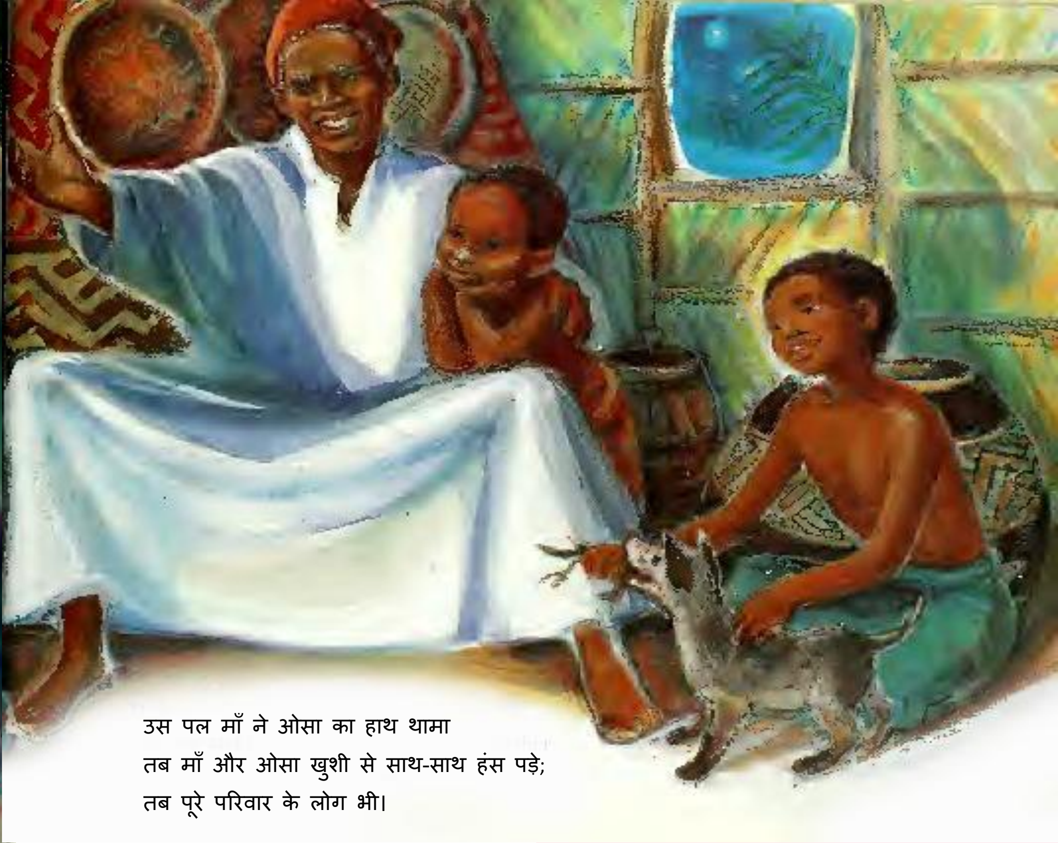
सयानी औरत भी खड़ी हुई
और अपनी नई दोस्त की ओर देख मुस्कुराई।
ओसा ने लिपट कर उससे विदा ली, और वादा किया
"मैं जरूर मिलने वापस आऊंगी, देखना!"



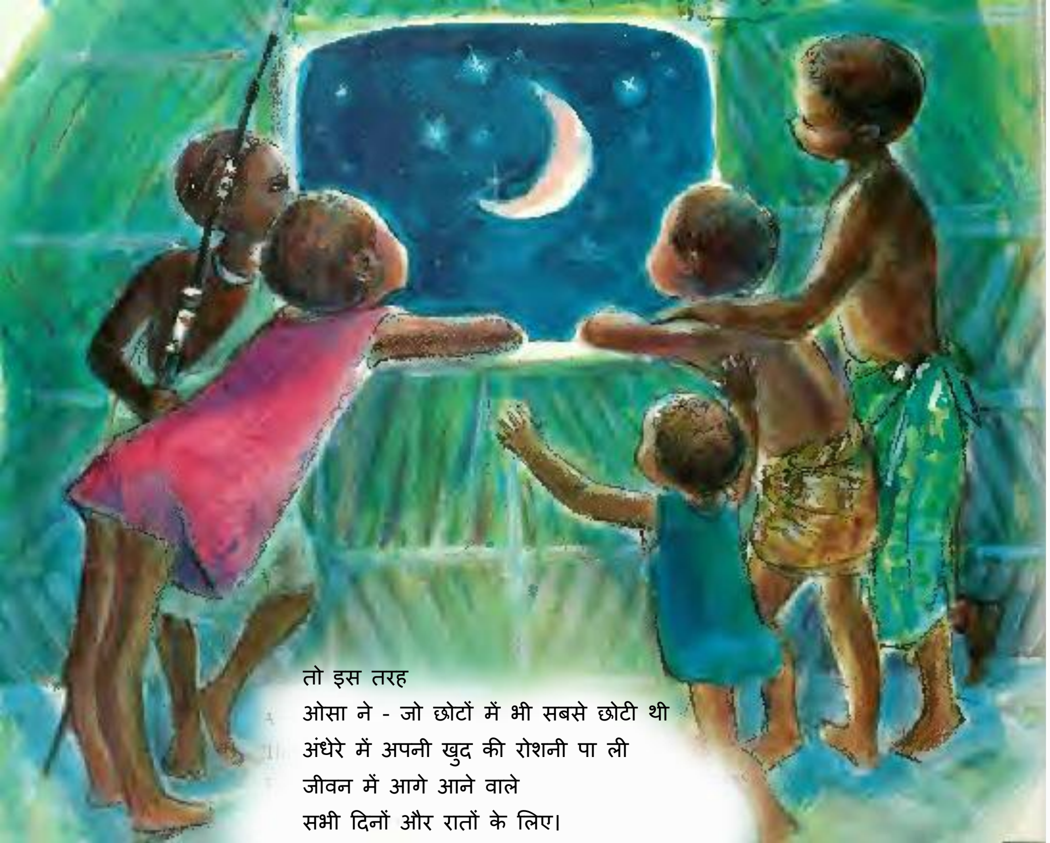
तब ओसा अपने घर की ओर दौड़ी . . . तितली की सी तेज़ी से।
हालांकि काफ़ी अंधेरा था
ओसा को अपना रास्ता मिला।
बोतल पेड़ों के परे नीचे वादी पर उतर
ठेठ अपने गाँव तक।
और उसे कतई डर नहीं लगा।



जब आसा घर पहुँची
वह उत्साह से इस कदर भरी थी कि उससे रुका तक नहीं गयाः
"माँ, माँ! मैं तितली जितनी बहादुर बन सकती हूँ .....देखो
मैं अब अंधेरे से नहीं डरती!"
माँ ने ओसा को देखा - बात एकदम सच थी!
..अंधेरा हो चुका था, पर ओसा को डर नहीं लग रहा था!



उस पल माँ ने ओसा का हाथ थामा
तब माँ और ओसा खुशी से साथ-साथ हंस पड़े;
तब पूरे परिवार के लोग भी।



तो इस तरह
ओसा ने - जो छोटों में भी सबसे छोटी थी
अंधेरे में अपनी खुद की रोशनी पा ली
जीवन में आगे आने वाले
सभी दिनों और रातों के लिए।

